http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 7, 06-11

Article ID:614

पशुओं में थनैला रोग: एक गंभीर समस्या बचाव, सावधानियां एवं विस्तृत उपचार

डॉ. करुणेश दूबे[1], मान्या पाण्डे[2], छाया मिश्रा[3], डॉ. सुबेदार सिंह[4]

[1]सहायक प्राध्यापक, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा, उत्तर प्रदेश

[2,3] छात्रा बी एस सी ऑनर्स एग्रीकल्चर, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा, उत्तर प्रदेश

[4] सहायक प्राध्यापक मंदसौर विश्वविद्यालय, मंदसौर, मध्य प्रदेश

***अनुरूपी लेखक**

डॉ. सुबेदार सिंह*

थनैला (मास्टाइटिस) पशुओं में होने वाला एक गंभीर रोग है, जो न केवल पशु के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है बल्कि दुग्ध उत्पादन में भी कमी लाता है। इस रोग के कारण पशु को अत्यधिक पीड़ा होती है और पशुपालकों को आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। स्वच्छ पशुशाला, दूध दुहने की सही विधि, टीट डिपिंग तथा नियमित स्वास्थ्य जांच के माध्यम से इस रोग की रोकथाम की जा सकती है। यदि हम सभी पशुपालक जागरूकता और स्वच्छता को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं, तो थनैला रोग पर प्रभावी नियंत्रण संभव है। स्वस्थ पशु, अधिक उत्पादन और समृद्ध किसान के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें मिलकर प्रयास करना होगा। थनैला मुक्त हो पशु हमारा, यही संकल्प है आज हमारा।

भारत की दुग्ध उत्पादन स्थिति

वैश्विक एवं राष्ट्रीय परिदृश्य

हम सभी जानते हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार पशुपालन एवं डेयरी उद्योग है। डेयरी क्षेत्र न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है, बल्कि देश की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) तथा भारत सरकार के नवीनतम आँकड़ों के अनुसार, भारत विश्व में दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में प्रथम स्थान पर है। वर्ष 2024-25 में देश का कुल दुग्ध उत्पादन 247.87 मिलियन टन रहा, जो पिछले वर्ष की तुलना में 3.58 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। वर्तमान में देश में दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धता बढ़कर 485 ग्राम प्रतिदिन हो गई है, जो वैश्विक औसत से अधिक है। दुग्ध उत्पादन में उत्तर प्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है, जिसका योगदान 15.66 प्रतिशत है। इसके बाद राजस्थान (14.82%), मध्य प्रदेश (9.12%), गुजरात (7.78%) तथा महाराष्ट्र (6.71%) क्रमशः दूसरे, तीसरे, चौथे एवं पाँचवें स्थान पर हैं। ये आँकड़े दर्शाते हैं कि भारत का डेयरी क्षेत्र निरंतर प्रगति कर रहा है तथा किसानों की आय वृद्धि और ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

प्रजाति स्तर पर दुग्ध उत्पादन में योगदान

भारत के कुल दुग्ध उत्पादन में विभिन्न पशु प्रजातियों एवं नस्लों का महत्वपूर्ण योगदान है। दुग्ध उत्पादन में भैंसों की भूमिका सबसे अधिक मानी जाती है। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार, स्वदेशी भैंसों का योगदान लगभग 31.15 प्रतिशत है, जबकि गैर-वर्णित (नॉन-डिस्क्रिप्ट) भैंसों का योगदान लगभग 11.97 प्रतिशत है।गायों का भी दुग्ध उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान है। शंकर (क्रॉसब्रेड) गायें कुल दुग्ध उत्पादन में लगभग 24.50 प्रतिशत का योगदान देती हैं। इसके अतिरिक्त, स्वदेशी गायों का योगदान लगभग 11.20 प्रतिशत तथा विदेशी नस्ल की गायों का योगदान लगभग 2 प्रतिशत है। ये आँकड़े स्पष्ट

करते हैं कि भारत के डेयरी क्षेत्र में भैंसों एवं गायों दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः पशुओं के बेहतर स्वास्थ्य, संतुलित पोषण एवं वैज्ञानिक प्रबंधन द्वारा दुग्ध उत्पादन को और अधिक बढ़ाया जा सकता है।

थनैला रोग का परिचय और इसका विपरीत प्रभाव:

जिस प्रकार से हमारे देश का दुग्ध उत्पादन दर है, दुग्ध की इतनी उत्पादकता को श्वेत क्रांति जैसे शब्दों का उपयोग किया जा रहा है तथा इस विशाल दुग्ध साम्राज्य में एक बड़ा शत्रु थनैला बनकर खड़ा है, थनैला मुख्य रूप से दुधारू पशुओं में (विशेष रूप से गाय और भैंसे दोनों) के अयन में होने वाला एक अत्यधिक दर्दनाक जीवाणु संक्रमण है।

***कौन से जानवर प्रभावित होते हैं?**

यह रोग विशेष रूप से अधिक दूध देने वाले गायों में सबसे अधिक होता है, क्योंकि उनका अयन बड़ा होता है हालांकि यह स्वदेशी गायों भैंसों, बकरियां में भी फैलता है।

* थनैला रोग की प्रसारण दर?

विभिन्न अध्ययनों के अनुसार भारत में लगभग 50% तक दुधारू गाय व भैंस अपने जीवन काल में कभी ना कभी थनैला से ग्रसित होती हैं।

* दूध उत्पादन और आर्थिक हानि पर असर?

थनैला से ग्रसित तथा प्रभावित पशु के दुग्ध उत्पादन में 20% से 40% तक की भारी गिरावट आ जाती है तथा इस रोग से ग्रसित पशु यदि गंभीर स्थिति पर है तो उसका दूध पूरी तरह से मवाद या खून में बदल जाता है तथा थन हमेशा के लिए अनुपयुक्त हो जाता है

* इस रोग से ग्रसित पशु रिकवर करते हैं अथवा रिकवरी दर कितनी है?

यदि शुरुआत में ही इसका इलाज और सावधानियां नहीं अपनी गई तो लगभग 15 से 20% पशुओं के थन नष्ट हो जाते हैं जिन्हें कभी ठीक नहीं किया जा सकता।

* किसानों पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

थनैला रोग न केवल दुग्ध उत्पादन काम करता है बल्कि इसका बुरा प्रभाव किसने की पूंजी पर भी पड़ता है एक अनुमान के अनुसार एक पशुपालक के कुल पशु चिकित्सा बजट का 35 से 40% हिस्सा सिर्फ थनैला रोग की महंगी दवाइयां और डॉक्टर की फीस पर खर्च हो जाता है यही कारण है कि थनैला को डेरी उद्योग का साइलेंट किलर कहा जाता है क्योंकि कई बार यह बीमारी बिना किसी बाहरी लक्षण के पशु के अंदर पनपत्ति रहती है।

* थनैला रोग का वैज्ञानिक कारण और फैलाव:

थनैला रोग के कारण एवं संक्रमण का प्रसार

थनैला (मास्टाइटिस) रोग मुख्य रूप से सूक्ष्मजीवों द्वारा होने वाला एक संक्रामक रोग है, जो पशु के थन एवं दुग्ध ग्रंथियों को प्रभावित करता है। इस रोग के लिए विभिन्न प्रकार के जीवाणु, कवक एवं अन्य रोगजनक सूक्ष्मजीव जिम्मेदार हो सकते हैं।

प्रमुख जीवाणु (Bacteria):

- Staphylococcus aureus
- Streptococcus agalactiae
- Escherichia coli (E. coli)

ये जीवाणु थनैला रोग के सबसे प्रमुख कारक माने जाते हैं और पशुओं में संक्रमण फैलाने के लिए जिम्मेदार होते हैं।

कवक एवं खमीर (Fungi and Yeasts): कुछ परिस्थितियों में फफूंद (फंगल) एवं खमीर जनित संक्रमण भी थनों में सूजन, दर्द एवं संक्रमण का कारण बन सकते हैं। विशेष रूप से गंदे एवं नम वातावरण में ऐसे संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है।

संक्रमण कैसे फैलता है?

पशु के थन का निचला भाग, जिसे टीट कैनाल (Teat Canal) कहा जाता है, सामान्यतः बंद रहता है और बाहरी रोगजनकों को अंदर प्रवेश करने से रोकता है। दूध दुहने के दौरान यह मार्ग खुल जाता है। यदि दूध दुहने के बाद पशु गंदे, कीचड़युक्त या गोबर से भरे स्थान पर बैठ जाता है, तो वातावरण में मौजूद रोगजनक जीवाणु खुले टीट कैनाल के माध्यम से थन के अंदर प्रवेश कर सकते हैं और संक्रमण उत्पन्न

कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, यदि किसी संक्रमित पशु का दूध दुहने के बाद हाथों या दुग्ध दुहन उपकरणों को साफ किए बिना स्वस्थ पशु का दूध दुहा जाए, तो संक्रमण एक पशु से दूसरे पशु में आसानी से फैल सकता है। इसी कारण दुग्ध दुहन के समय स्वच्छता एवं जैव-सुरक्षा उपायों का पालन अत्यंत आवश्यक है। अतः थनैला रोग की रोकथाम के लिए स्वच्छ पशुशाला, साफ-सुथरी दुग्ध दुहन प्रक्रिया तथा संक्रमित पशुओं का समय पर उपचार अत्यंत महत्वपूर्ण है।

थनैला रोग के प्रकार:

अध्ययन और लक्षणों के आधार पर थनैला रोग को मुख्य रूप से दो अलग भागों में बांटा गया है।

क्लीनिकल थनैला:

इस प्रकार के थनैला में लक्षण बाहर से साफ दिखाई देते हैं। हम स्कूल जाता है, लाल रहता है, गर्म हो जाता है, और दूध का रंग बदल जाता है तथा दर्द से पशु दूध निकालने नहीं देता।

क्लीनिकल थनैला: यह सबसे खतरनाक रूप है इसमें बाहर से ठंड में कोई सूजन या दर्द दिखाई नहीं देता और दूध भी सामान्य दिखता है लेकिन पशु का दूध उत्पादन धीरे-धीरे कम होने लगता है और दूध में जीवाणुओं की संख्या बढ़ जाती है , किसान इसे पहचान नहीं पता और पूरे थन को नष्ट कर देता है।

रोग के प्रमुख लक्षण:

पशुओं में निम्नलिखित बदलाव दिखते ही शक हो जाना चाहिए _

* आयन और थन में बदलाव: थन का आकार असामान्य होना, अधिक कड़ा हो जाना, छूने पर गर्म महसूस होना और थन पर लालिमा आना।
* दूध की गुणवत्ता में गिरावट: दूध का पतला या पानी जैसा हो जाना, दूध में पीले रंग का मवाद आना खून के धब्बे दिखाई देना, दूध का स्वाद नमकीन हो जाना।
* पशु के व्यवहार में बदलाव:

दूध धोते समय पशु का लात मारना दर्द से छटपटाना, उठने बैठने में तकलीफ होना।

* शारीरिक लक्षण:

पशु को तेज बुखार 104 से 106 डिग्री फॉरेनहाइ होना, जुगाली बंद कर देना, सुस्त हो जाना और आंखें लाल हो जाना।

डेरी उद्योग पर थनैला का आर्थिक प्रभाव_

हमें इस विषय पर बात करना जरूरी है, कि थनैला एक बीमारी ही नहीं बल्कि आर्थिक आपदा है।

* दूध उत्पादन की हानि: थनैला से ग्रसित पशुओं का दूध उत्पादन 50 से 80% तक गिर जाता है, कई बार ठान हमेशा के लिए अंधा हो जाता है जिससे पशु भविष्य के लिए बेकार हो जाता है
* महंगा इलाज: एंटीबायोटिक दावों और डॉक्टरों की फीस के कारण किसान पर भारी वित्तीय बोझ पड़ता है।
* दूध का रिजेक्शन: संक्रमित दूध किसानों के पीने योग्य नहीं रहता क्योंकि उसमें एंटीबायोटिक के अवशेष और हानिकारक जीवाणु होते हैं, डेयरी कंपनियां ऐसा दूध खरीदने से मना कर देती हैं।

थनैला रोग की पहचान एवं परीक्षण

थनैला (मास्टाइटिस) रोग की समय पर पहचान करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि प्रारंभिक अवस्था में इसका पता चल जाने पर उपचार अधिक प्रभावी होता है और दुग्ध उत्पादन में होने वाली हानि को कम किया जा सकता है। विशेष रूप से सब-क्लिनिकल (Subclinical) थनैला में बाहरी लक्षण स्पष्ट दिखाई नहीं देते, इसलिए इसकी पहचान के लिए कुछ सरल परीक्षण किए जाते हैं।

1. स्ट्रिप कप टेस्ट (Strip Cup Test)

यह थनैला की प्रारंभिक पहचान के लिए एक सरल एवं व्यावहारिक परीक्षण है। दूध दुहने से पहले प्रत्येक थन से दूध की पहली 2–3 धारें किसी काले रंग की प्लेट, ट्रे या स्ट्रिप कप में निकाली जाती हैं। यदि दूध में छोटे-छोटे थक्के, धब्बे, छिछड़े या असामान्य कण दिखाई दें, तो यह थन में संक्रमण अथवा थनैला रोग की शुरुआत का संकेत हो सकता है। यह परीक्षण पशुपालक स्वयं भी आसानी से कर सकते हैं।

2. कैलिफोर्निया मैस्टाइटिस टेस्ट (California Mastitis Test - CMT)

यह सब-क्लिनिकल थनैला की पहचान के लिए सबसे लोकप्रिय और विश्वसनीय परीक्षणों में से एक है। इस परीक्षण में एक विशेष प्लास्टिक पैडल के चारों खानों में पशु के चारों थनों का थोड़ा-थोड़ा दूध लिया जाता है। इसके बाद प्रत्येक खाने में समान मात्रा में CMT लिक्विड मिलाकर हल्के हाथों से घुमाया जाता है। यदि मिश्रण सामान्य बना रहता है तो परिणाम नकारात्मक माना जाता है, लेकिन यदि दूध गाढ़ा होकर जेल या जेली जैसा दिखाई देने लगे, तो यह थनैला संक्रमण की उपस्थिति का संकेत देता है और परीक्षण को पॉजिटिव माना जाता है। इन सरल परीक्षणों की सहायता से थनैला रोग की प्रारंभिक अवस्था में ही पहचान की जा सकती है, जिससे समय पर उपचार एवं उचित प्रबंधन द्वारा पशु के स्वास्थ्य और दुग्ध उत्पादन को सुरक्षित रखा जा सकता है।

थनैला रोग से बचाव एवं आवश्यक सावधानियाँ

थनैला (मास्टाइटिस) रोग की रोकथाम उपचार की अपेक्षा अधिक सरल, कम खर्चीली एवं प्रभावी होती है। यदि पशुपालक दैनिक प्रबंधन में कुछ आवश्यक सावधानियाँ अपनाएँ, तो इस रोग की संभावना को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

(क) पशुशाला का उचित प्रबंधन

- पशुओं के बैठने का स्थान साफ, सूखा एवं स्वच्छ होना चाहिए। गोबर एवं मूत्र की उचित निकासी की व्यवस्था हो, जिससे नमी और गंदगी जमा न हो।
- सप्ताह में कम से कम दो बार पशुशाला में चूने का छिड़काव करना चाहिए। चूना नमी को कम करने के साथ-साथ अनेक हानिकारक जीवाणुओं के नियंत्रण में भी सहायक होता है।
- पशुशाला हवादार हो तथा उसमें पर्याप्त मात्रा में सूर्य का प्रकाश पहुँचता रहे। धूप एवं स्वच्छ वातावरण रोगजनक जीवाणुओं की संख्या को कम करने में मदद करते हैं।

(ख) दूध दुहने की वैज्ञानिक तकनीक

- फुल हैंड मिल्किंग (Full Hand Milking): दूध दुहते समय हमेशा पूर्ण हस्त विधि अपनानी चाहिए। अंगूठे एवं उँगलियों से थन को मोड़कर या दबाकर दूध निकालने से थन को नुकसान पहुँच सकता है, जो आगे चलकर थनैला का कारण बन सकता है।
- पोटैशियम परमैंगनेट (लाल दवा) का उपयोग: दूध दुहने से पहले थनों को साफ पानी अथवा पोटैशियम परमैंगनेट (लाल दवा) के हल्के घोल से साफ करना चाहिए, जिससे संक्रमण की संभावना कम हो जाती है।
- टीट डिपिंग (Teat Dipping): यह थनैला रोकथाम का सबसे महत्वपूर्ण उपाय माना जाता है। दूध दुहने के बाद थन के छिद्र लगभग 30 मिनट तक खुले रहते हैं। इसलिए दूध दुहने के तुरंत बाद थनों को आयोडीन लोशन अथवा वाणिज्यिक टीट-डिप घोल में कम से कम 20–30 सेकंड तक डुबोना चाहिए, जिससे जीवाणुओं का प्रवेश रोका जा सके।
- पशु को खड़ा रखना: दूध दुहने के तुरंत बाद पशु को बैठने नहीं देना चाहिए। इसके लिए उसके सामने हरा चारा या पसंदीदा आहार रख सकते हैं, जिससे वह लगभग 30–45 मिनट तक खड़ा रहे। इस अवधि में थन के छिद्र प्राकृतिक रूप से बंद हो जाते हैं और संक्रमण का खतरा कम हो जाता है।

(ग) सूखे पशुओं (Dry Animals) का प्रबंधन

जब गाय या भैंस को अगले ब्यांत (प्रसव) से लगभग दो महीने पहले सुखाया जाता है, तब थनों की विशेष देखभाल आवश्यक होती है। इस अवधि में पशु चिकित्सक की सलाह से ड्राई काऊ थेरेपी (Dry Cow Therapy) की ट्यूब थनों में डलवानी चाहिए। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार, यह उपाय अगले

ब्यांत में थनैला रोग की संभावना को लगभग 90 प्रतिशत तक कम कर सकता है।

अतः स्वच्छता, वैज्ञानिक दुग्ध दुहन तकनीक तथा सूखे पशुओं के उचित प्रबंधन को अपनाकर थनैला रोग की रोकथाम प्रभावी ढंग से की जा सकती है और पशुओं के स्वास्थ्य एवं दुग्ध उत्पादन को बेहतर बनाया जा सकता है।

थनैला रोग का उपचार एवं प्रबंधन

यदि पशु थनैला (मास्टाइटिस) रोग से संक्रमित हो जाए, तो उपचार की आवश्यकता रोग की गंभीरता के अनुसार होती है। सामान्यतः उपचार को दो स्तरों में विभाजित किया जा सकता है— पारंपरिक/आयुर्वेदिक उपचार तथा आधुनिक चिकित्सीय उपचार।

(क) पारंपरिक एवं आयुर्वेदिक उपचार

रोग की प्रारंभिक अवस्था में कुछ घरेलू एवं आयुर्वेदिक उपाय लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं।

1. एलोवेरा, हल्दी एवं चूने का लेप

इसके लिए लगभग 250 ग्राम एलोवेरा का गूदा, 50 ग्राम हल्दी पाउडर तथा 15–20 ग्राम खाने वाला चूना लें। इन सभी को अच्छी तरह मिलाकर गाढ़ा पेस्ट तैयार करें। इस लेप को संक्रमित थन पर दिन में 3–4 बार नीचे से ऊपर की दिशा में लगाएं। इससे सूजन एवं दर्द में राहत मिल सकती है।

2. नींबू के रस का उपयोग

संक्रमित पशु को प्रतिदिन 3–4 नींबू का रस पानी में मिलाकर पिलाने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को सहयोग मिलता है तथा संक्रमण के प्रभाव को कम करने में सहायता मिल सकती है।

3. ठंडी सिकाई (Cold Compress)

यदि थन में अधिक सूजन, गर्माहट या दर्द हो, तो कपड़े में बर्फ लपेटकर 10–15 मिनट तक हल्की ठंडी सिकाई की जा सकती है। इससे सूजन और दर्द में राहत मिलती है।

महत्वपूर्ण सावधानी:

थनैला रोग में कभी भी गर्म सिकाई नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इससे सूजन एवं संक्रमण बढ़ने की संभावना रहती है।

(ख) आधुनिक चिकित्सीय उपचार

यदि रोग गंभीर हो या पशु की स्थिति में सुधार न हो, तो बिना विलंब किए पंजीकृत पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए। चिकित्सक रोग की स्थिति एवं संक्रमण के प्रकार के अनुसार उपचार निर्धारित करते हैं।

1. एंटीबायोटिक उपचार

बैक्टीरिया की पहचान एवं रोग की गंभीरता के आधार पर एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग किया जाता है। इनमें सेफ्ट्रिएक्सोन (Ceftriaxone), एमोक्सिसिलिन + सल्बैक्टम (Amoxicillin + Sulbactam) आदि दवाएं चिकित्सकीय परामर्श से दी जा सकती हैं।

2. इंट्रामैमरी (Intramammary) ट्यूब

थन के भीतर सीधे दवा पहुंचाने के लिए विशेष ट्यूबों का उपयोग किया जाता है। दवा देने से पहले प्रभावित थन का पूरा दूध निकाल देना आवश्यक होता है, जिससे दवा प्रभावी रूप से कार्य कर सके।

3. दर्द एवं सूजन नियंत्रण

पशु के दर्द, बुखार और सूजन को कम करने के लिए मेलॉक्सिकैम (Meloxicam) या फ्लुनिक्सिन मेग्लुमाइन (Flunixin Meglumine) जैसी एंटी-इन्फ्लेमेटरी दवाओं का उपयोग पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार किया जाता है। अतः थनैला रोग में समय पर पहचान, उचित उपचार तथा पशु चिकित्सक की सलाह का पालन करने से पशु शीघ्र स्वस्थ हो सकता है तथा दुग्ध उत्पादन में होने वाली हानि को कम किया जा सकता है।

निष्कर्ष

थनैला (मास्टाइटिस) रोग डेयरी पशुओं में होने वाली सबसे महत्वपूर्ण एवं आर्थिक दृष्टि से हानिकारक बीमारियों में से एक है। यह रोग न केवल पशुओं के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, बल्कि दुग्ध उत्पादन

एवं दूध की गुणवत्ता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। यद्यपि इसका उपचार उपलब्ध है, फिर भी उपचार पर होने वाला खर्च अधिक होता है और कई बार पशु की दुग्ध उत्पादन क्षमता पहले जैसी पूर्णतः नहीं हो पाती। इसी कारण थनैला रोग के संदर्भ में "रोकथाम उपचार से बेहतर है" का सिद्धांत पूर्णतः सार्थक सिद्ध होता है। स्वच्छ पशुशाला, संतुलित पोषण, दूध दुहने की वैज्ञानिक विधि, टीट डिपिंग तथा नियमित स्वास्थ्य जांच जैसे उपाय इस रोग की रोकथाम में अत्यंत प्रभावी हैं। यदि पशुपालक जागरूकता, स्वच्छता और वैज्ञानिक पशुपालन पद्धतियों को अपनाएं, तो थनैला रोग पर प्रभावी नियंत्रण संभव है। इससे पशुओं का स्वास्थ्य बेहतर रहेगा, दुग्ध उत्पादन में वृद्धि होगी और पशुपालकों की आय भी बढ़ेगी। स्वस्थ पशु, समृद्ध किसान और सशक्त डेयरी उद्योग के निर्माण हेतु हम सभी को मिलकर थनैला मुक्त भारत के संकल्प को साकार करना होगा।